

॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ श्री दत्तात्रेय नमः ॥

श्री दत्तात्रेय चालीसा

Dattatreya Chalisa — दोहा, ४० चौपाई, सरल हिंदी भावार्थ एवं पाठ विधि सहित

रचयिता: परंपरागत ✓ निःशुल्क प्रामाणिक PDF

॥ प्रारंभिक दोहा ॥

दोहा १

अत्रि अनुसूया नन्दन, त्रिमूर्ति अवतार।
दत्तात्रेय प्रभु चरणन में, करूँ बारम्बार प्रणाम॥

भावार्थ: महर्षि अत्रि और माता अनसूया के पावन पुत्र, ब्रह्मा-विष्णु-महेश के संयुक्त अवतार भगवान दत्तात्रेय के श्रीचरणों में मैं बारंबार प्रणाम करता हुँ।

दोहा २

ज्ञान वैराग्य के सागर, दिगम्बर अवधूत।
शरण तुम्हारी आया हुँ, हरो सकल भव-भूत॥

भावार्थ: हे ज्ञान और वैराग्य के अगाध सागर, दिगंबर अवधूत स्वरूप प्रभु! मैं आपकी पावन शरण में आया हुँ, कृपा करके इस संसार के समस्त भय, बाधाओं और जन्म-मरण के संतापों को हर लीजिए।

॥ संपूर्ण चालीस चौपाइयाँ (सरल हिंदी भावार्थ सहित) ॥

चौपाई १

जयति जयति दत्तात्रेय दयाला।
आदिगुरु जग के प्रतिपाला॥

अर्थ: हे परम दयालु भगवान दत्तात्रेय! आपकी सदा जय हो; आप संपूर्ण चराचर जगत का पालन-पोषण करने वाले आदिगुरु हैं।

चौपाई २

ब्रह्मा विष्णु शिव त्रय अवतारा।
एक देह में रूप अपारा॥

अर्थ: सृजनकर्ता ब्रह्मा, पालनकर्ता विष्णु और संहारकर्ता शिव — इन तीनों शक्तियों ने मिलकर आपके एक ही दिव्य देह में अनुपम रूप धारण किया है।

चौपाई ३

अत्रि ऋषि के सुत प्रिय नाथा।
अनुसूया माता सुविख्याता॥

अर्थ: सप्तर्षियों में श्रेष्ठ महर्षि अत्रि आपके पूज्य पिता हैं और पतिव्रत धर्म की साक्षात मूर्ति माता अनसूया आपकी विख्यात माता हैं।

चौपाई ४

त्रिमुख षड्भुज रूप सुहावन।
दिगम्बर वेश अलौकिक पावन॥

अर्थ: आपके तीन मुख और छह भुजाएं अत्यंत मनोहर हैं; समस्त दिशाओं को वस्त्र मानकर धारण करने वाला आपका दिगंबर स्वरूप परम पावन और अलौकिक है।

चौपाई ५

दाहिने हाथ त्रिशूल कमंडल।
रुद्राक्षमाल शोभित मंगल॥

अर्थ: आपके दाहिने हाथों में भगवान शिव का त्रिशूल, ब्रह्मा जी का कमंडल और मंगलकारी रुद्राक्ष की पवित्र जपमाला सुशोभित है।

चौपाई ६

बाम भुज चक्र शंख सुशोभे।
देखत रूप सुर नर मन मोहे॥

अर्थ: बाएं हाथों में भगवान विष्णु का सुदर्शन चक्र, पावन शंख और डमरू शोभायमान हैं, जिनके अलौकिक दर्शन से देव, गंधर्व और मानव सभी मुग्ध हो जाते हैं।

चौपाई ७

चार श्वान संग चारों वेदा।
कामधेनु गौ हरति कलेदा॥

अर्थ: आपके साथ निरंतर विचरण करने वाले चार श्वान चारों वेदों के प्रतीक हैं और पीछे खड़ी कामधेनु गौ समस्त क्लेशों, अभावों और संतापों का हरण करती है।

चौपाई ८

औदुम्बर तरु तले विराजे।
अवधूत अनघ रूप छवि साजे॥

अर्थ: आप पवित्र औदुंबर (गूलर) वृक्ष के नीचे ध्यानमग्न विराजते हैं; समस्त पापों से रहित निष्कलंक अवधूत के रूप में आपकी छवि दिव्य शांति बरसाती है।

चौपाई ९

भस्म रमाये जटाजूट धारी।
त्रिगुण अतीत महिमा भारी॥

अर्थ: संपूर्ण देह पर पवित्र भस्म रमाए और मस्तक पर जटाजूट धारण किए आप सत्व, रज और तम — तीनों गुणों से परे परम महिमामय प्रभु हैं।

चौपाई १०

चौबीस गुरु करि ज्ञान सिखावा।
जगत माहिं समभाव लखावा॥

अर्थ: आपने प्रकृति और प्राणियों में से चौबीस गुरु बनाकर संसार को यह अमर शिक्षा दी कि हर स्थिति में समभाव, अनासक्ति और आत्मज्ञान कैसे बनाए रखें।

चौपाई ११

पृथ्वी जल पावक अरु बाता।
आकाश चन्द्र सूर्य विधाता॥

अर्थ: पृथ्वी से क्षमा, जल से शीतलता, अग्नि से तप, वायु से निर्लिप्तता तथा आकाश, चंद्र और सूर्य से निरंतर प्रकाश व समदृष्टि की प्रेरणा आपने ग्रहण की।

चौपाई १२

कपोत अजगर सिन्धु पतंगा।
मधुहा गज मीन कुरंगा॥

अर्थ: कपोत से मोह-त्याग, अजगर से संतोष, सागर से गंभीरता और पतंगे, भौंरे, हाथी, मछली व मृग से इंद्रिय-संयम का दिव्य उपदेश आपने जग को दिया।

चौपाई १३

पिंगला कुरर बालक कुमारी।
शरकृत सर्प ऊर्णनाभि सारी॥

अर्थ: पिंगला, कुरर पक्षी, निष्पाप बालक, कुमारी कन्या, तीरंदाज, सर्प और मकड़ी को भी आपने गुरु रूप में देखकर जीवन की सूक्ष्म सच्चाईयों का बोध कराया।

चौपाई १४

राजा यदु को उपदेश दीन्हा।
उद्धव गीता ज्ञान प्रवीणा॥

अर्थ: आपने महाराज यदु को आत्मज्ञान का गूढ़ उपदेश दिया, जिसकी पावन चर्चा श्रीमद्भागवत महापुराण की उद्धव गीता में विस्तार से की गई है।

चौपाई १५

परशुराम को विद्या दीन्हीं।
त्रिपुरारहस्य सिद्धि परवीन्हीं॥

अर्थ: भगवान परशुराम को आपने आत्मविद्या प्रदान की और 'त्रिपुरा रहस्य' नामक सर्वोच्च शाक्त दर्शन की दीक्षा देकर कृतार्थ किया।

चौपाई १६

सहस्रबाहु अर्जुन वर पावा।
दत्त कृपा ते राज चलावा॥

अर्थ: राजा कार्तवीर्य सहस्रार्जुन ने आपकी ही अनन्य उपासना कर अजेय बल और ऋद्धि-सिद्धियों का वर पाकर धर्मानुकूल विशाल राज्य चलाया।

चौपाई १७

अलर्क राजा को संकट तारा।
मदालसा सुत भव से उबारा॥

अर्थ: तत्वज्ञानी माता मदालसा के पुत्र राजा अलर्क को आपने योग और वैराग्य का मार्ग दिखाकर राजकाज के समस्त बंधनों और संतापों से मुक्त किया।

चौपाई १८

भक्त हेतु प्रभु सदा सहाई।
स्मरण मात्र से पहुंचे धाई॥

अर्थ: अपने शरणागत भक्त की एक पुकार सुनते ही आप सहायता के लिए दौड़े चले आते हैं — इसीलिए शास्त्रों में आपको 'स्मरण-गामी' कहा गया है।

चौपाई १९

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु साखी।
गुरु देवो महेश्वर राखी॥

अर्थ: वेदों और उपनिषदों की यह वाणी साक्षात सत्य है कि गुरु ही ब्रह्मा, गुरु ही विष्णु और गुरु ही महेश्वर शिव बनकर जीव की रक्षा करते हैं।

चौपाई २०

गुरु साक्षात परब्रह्म दयाला।
दत्तात्रेय करहु निहाला॥

अर्थ: आप ही साक्षात परब्रह्म परमात्मा हैं; हे करुणामय प्रभु दत्तात्रेय! हम पर अपनी अमृतमयी दृष्टि डालकर हमें सदा के लिए निहाल कर दीजिए।

चौपाई २१

अनसूया तप बल जग जाना।
त्रिदेव बालक रूप समाना॥

अर्थ: माता अनसूया के अलौकिक तपोबल और सतीत्व के सामने झुककर तीनों देव नन्हें बालक बनकर उनके पालने में खेलने लगे।

चौपाई २२

जय दिगम्बर जय सुखदाता॥
अखिल विश्व के पालक त्राता॥

अर्थ: हे दिगंबर स्वामी! आपकी जय हो; आप संपूर्ण संसार को सुख देने वाले, ब्रह्मांड का भरण-पोषण करने वाले और विपत्तियों से बचाने वाले त्राता हैं।

चौपाई २३

नवद्वार पुर शोभित काया।
मोह न पावे तेरी माया॥

अर्थ: इस नौ द्वारों वाले मानव शरीर में रहते हुए भी जो साधक आपका ध्यान करता है, उसे इस संसार की माया कभी विचलित नहीं कर सकती।

चौपाई २४

गंगा तट गिरनार निवासा॥
माहुर गढ़ प्रभु करत विलासा॥

अर्थ: पवित्र नर्मदा-गंगा के तट, सिद्धक्षेत्र गिरनार पर्वत और माहुरगढ़ शक्तिपीठ में आपकी दिव्य चेतन उपस्थिति आज भी प्रत्यक्ष अनुभव होती है।

चौपाई २५

काशी स्नान कोल्हपुर भिक्षा॥
पांचालेश्वर देते दीक्षा॥

अर्थ: काशी में प्रातः मणिकर्णिका स्नान, कोल्हापुर में दोपहर की भिक्षा और पांचालेश्वर में योग-दीक्षा — इस अवधूत चर्या से आप त्रैलोक्य का उद्धार करते हैं।

चौपाई २६

कुरवपुर गाणगापुर धामा॥
नृसिंह सरस्वती पूरण कामा॥

अर्थ: कलियुग में कुरवपुर में श्रीपाद श्रीवल्लभ और गाणगापुर में श्री नृसिंह सरस्वती के अवतार रूपों में प्रकट होकर आपने भक्तों के सारे मनोरथ पूर्ण किए।

चौपाई २७

पितृ दोष जो नर को घेरे।
दत्त नाम सब संकट फेरे॥

अर्थ: जिस व्यक्ति को कुंडली या परिवार में पितृ दोष की पीड़ा सता रही हो, दत्तात्रेय नाम का श्रद्धापूर्वक स्मरण उसके सारे अवरोध और क्लेश मिटा देता है।

चौपाई २८

काल सर्प भय व्याधि विनाशन।
ग्रह पीड़ा सब करहु निवारण॥

अर्थ: कालसर्प दोष का भय, गंभीर शारीरिक व्याधियां तथा शनि, राहु, केतु आदि क्रूर ग्रहों की पीड़ा आपकी कृपा से शीघ्र शांत हो जाती है।

चौपाई २९

भूत पिशाच निकट नहिं आवे।
दत्त दिगम्बर नाम सुनावे॥

अर्थ: जहां भी 'श्री गुरुदेव दत्त दिगंबर' का पावन जयघोष होता है, वहां किसी भी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा, भूत या पिशाच कभी ठहर नहीं सकते।

चौपाई ३०

जो नर ध्यावे मन चित लाई।
दत्त कृपा से मुक्ति पाई॥

अर्थ: जो प्राणी सच्चे मन और निष्कपट भाव से आपका ध्यान धरता है, वह दत्त प्रभु की अमोघ कृपा से भव-बंधन काटकर मुक्ति प्राप्त करता है।

चौपाई ३१

पुत्रहीन जो तुमको ध्यावे।
सद्गुणवान सुपुत्र सो पावे॥

अर्थ: संतान सुख से वंचित दंपत्ति जब श्रद्धापूर्वक आपकी शरण में आते हैं, तो उन्हें सद्गुणी, संस्कारी और दीर्घायु संतान का वरदान मिलता है।

चौपाई ३२

निर्धन होय धनवान सुजाना।
विद्या पावे मूर्ख अज्ञाना॥

अर्थ: दरिद्र व्यक्ति को स्थायी सुख-समृद्धि प्राप्त होती है और अल्पबुद्धि मनुष्य भी परम विवेक, विद्या और ज्ञान का धनी बन जाता है।

चौपाई ३३

गुरुवार व्रत जो जन राखे।
अमृत रस सो प्राणी चाखे॥

अर्थ: जो भक्त प्रत्येक गुरुवार को नियमपूर्वक व्रत और इस चालीसा का पाठ करता है, वह जीवन में आध्यात्मिक आनंद के अमृत रस का आस्वादन करता है।

चौपाई ३४

धूप दीप नैवेद्य चढ़ावे।
दत्त आरती प्रेम से गावे॥

अर्थ: शुद्ध भाव से धूप, दीप और नैवेद्य अर्पित कर जो आपकी पावन आरती गाता है, उसके गृह में सुख, शांति और देवी अन्नपूर्णा का वास होता है।

चौपाई ३५

दीनदयाल कृपालु स्वामी।
सब घट अंतर के अंतर्यामी॥

अर्थ: हे दीन दुखियों पर अहैतुकी दया करने वाले कृपालु स्वामी! आप प्रत्येक जीव के अंतःकरण के भावों को जानने वाले सर्वव्यापी अंतर्यामी हैं।

चौपाई ३६

अपराध क्षमा सब कीजै नाथा।
निज चरणन में राखहु माथा॥

अर्थ: हे अनाथों के नाथ! हमारी अज्ञानतावश हुई समस्त त्रुटियों को क्षमा कीजिए और अपने शीतल श्रीचरणों में हमारे शीश को सदा स्थान दीजिए।

चौपाई ३७

दत्तात्रेय चालीसा जो गावे।
भोग और मोक्ष दोनों फल पावे॥

अर्थ: जो भी साधक इस श्री दत्तात्रेय चालीसा का नियमित पाठ करता है, उसे इस लोक में समस्त धर्मसम्मत सुख (भोग) और परलोक में मोक्ष प्राप्त होता है।

चौपाई ३८

रोग शोक संताप नसावे।
दत्तलोक में आदर पावे॥

अर्थ: उसके शारीरिक रोग, मानसिक शोक और सांसारिक ताप सदा के लिए नष्ट हो जाते हैं और अंत समय में उसे परम पावन दत्तलोक की प्राप्ति होती है।

चौपाई ३९

प्रेम सहित नित नेम से पढ़े।
ज्ञान भक्ति वैराग्य सो बढ़े॥

अर्थ: जो व्यक्ति नित्य नियम और अगाध प्रेम से इसका पाठ करता है, उसके अंतर्मन में आत्मज्ञान, निष्काम भक्ति और सच्चा वैराग्य निरंतर बढ़ता जाता है।

चौपाई ४०

जय जय जय दत्तात्रेय स्वामी।
शरण पड़े की लाज बचाई॥

अर्थ: हे जगदाधार भगवान दत्तात्रेय! आपकी सदा ही जय हो, जय हो, जय हो; अपनी शरण में आए इस तुच्छ सेवक की हर संकट में लाज रखिए।

॥ समापन दोहा ॥

समापन दोहा १

दत्त चालीसा जो पढ़े, प्रेम सहित नित रोज।
पितृ दोष हरि मुक्ति दे, खुले ज्ञान के रोज॥

भावार्थ: जो साधक प्रतिदिन प्रेम और निष्ठा से इस दत्त चालीसा का पाठ करता है, प्रभु उसके समस्त पितृ दोषों का निवारण कर ज्ञान के गुप्त द्वार खोल देते हैं।

समापन दोहा २

अत्रि-नन्दन दत्त प्रभु, करहु कृपा अपार।
भक्त जनों को मोक्ष दो, उतरें भव से पार॥

भावार्थ: हे अत्रि-नंदन भगवान दत्तात्रेय! हम सभी पर अपनी अपार कृपा कीजिए; अपने शरणागत भक्तों को मोक्ष का दान देकर इस भवसागर से पार उतारिए।

🪔 नित्य पाठ विधि एवं नियम

- **उत्तम दिन एवं तिथि:** गुरुवार का दिन, पूर्णिमा तिथि, प्रदोष काल अथवा मार्गशीर्ष मास की दत्त जयंती इस पाठ के लिए सर्वोत्तम है। यदि पितृ दोष निवारण के लिए पाठ कर रहे हैं, तो अमावस्या या पितृ पक्ष में नित्य पाठ करें।
- **आसन एवं दिशा:** प्रातःकाल अथवा सायंकाल स्नानादि से निवृत्त होकर स्वच्छ पीले अथवा श्वेत वस्त्र धारण करें। पूर्व अथवा उत्तर दिशा की ओर मुख करके कुशा या ऊनी आसन पर बैठें।
- **पूजन सामग्री:** लकड़ी की चौकी पर पीला वस्त्र बिछाकर भगवान दत्तात्रेय का चित्र अथवा मूर्ति स्थापित करें। उन्हें पीले पुष्प, तुलसी दल, अक्षत, पीला चंदन और पंचामृत या फल-मिष्ठान्न का नैवेद्य अर्पित करें।
- **दीप एवं धूप:** गाय के शुद्ध घी का दीपक और सुगंधित धूपबत्ती प्रज्वलित करें। भगवान दत्तात्रेय को औदुंबर (गूलर) का वृक्ष अत्यंत प्रिय है, यदि संभव हो तो औदुंबर वृक्ष के नीचे या समीप बैठकर पाठ करना अनंत गुना फलदायी माना जाता है।
- **संकल्प एवं पाठ:** आचमन कर हाथ में जल लेकर अपना नाम और मनोकामना बोलकर संकल्प लें। इसके पश्चात दो दोहे, चालीस चौपाइयों और दो समापन दोहों का शांत, एकाग्र और स्पष्ट वाणी में पाठ करें।

🌸 पाठ के अद्भुत लाभ

- **पितृ दोष एवं कुल-बाधा से तत्काल मुक्ति:** *"पितृ दोष जो नर को घेरे, दत्त नाम सब संकट फेरे"* — यदि कुंडली में पितृ दोष के कारण संतान प्राप्ति, विवाह या उन्नति में बाधा आ रही हो, तो दत्त चालीसा का पाठ पितरों को तृप्त कर आशीर्वाद दिलाता है।
- **कालसर्प एवं क्रूर ग्रह पीड़ा का शमन:** *"काल सर्प भय व्याधि विनाशन, ग्रह पीड़ा सब करहु निवारण"* — राहु, केतु और शनि जनित असाध्य कष्ट व मानसिक अवसाद दत्त प्रभु की शरण में आते ही शांत हो जाते हैं।
- **नकारात्मक ऊर्जा और भय का निवारण:** *"भूत पिशाच निकट नहिं आवे, दत्त दिगम्बर नाम सुनावे"* — बुरी नजर, तंत्र-बाधा, दुःस्वप्न और अज्ञात भय से सुरक्षा का यह अचूक आध्यात्मिक कवच है।
- **योग्य संतान एवं वंश वृद्धि:** *"पुत्रहीन जो तुमको ध्यावे, सद्गुणवान सुपुत्र सो पावे"* — संतानहीन दंपत्तियों के लिए गुरुवार का व्रत रखकर इस चालीसा का पाठ करना अत्यंत कल्याणकारी माना गया है।
- **विवेक, विद्या और आत्मज्ञान की प्राप्ति:** *"चौबीस गुरु करि ज्ञान सिखावा"* — यह पाठ बुद्धि को सूक्ष्म और निर्मल बनाकर सही निर्णय लेने की क्षमता तथा आध्यात्मिक वैराग्य प्रदान करता है।